झलकियाँ

बचपन की...

(बाल-कविता संग्रह)

सुरेखा नवरत्न

झलकियाँ

बचपन की...

(बाल- कविता संग्रह)

सुरेखा नवरत्न

सहायक शिक्षक, शा.. प्रा. शा छिर्रा

बिलाईगढ़, जिला- बलौदाबाजार

(छ.ग.) 7611172332.

रचना - सुरेखा नवरत्न

प्रिय बच्चों-

हमारे जीवन में सबसे यादगार पल बचपन का ही होता है | बचपन की मस्ती, खेलना, घूमना, रुठना- मनाना, गलियो में कूचो में, खेतो में खलिहानो में चिड़ियो सी चहकना, आसमानो में उड़ना | यही खुशियो की यादगार लम्हे उम्र भर के लिए हमारी स्मृति में बस जाती है | इसी बचपन की स्मृतियो, अनुभूतियो को कविता के माध्यम से मैंने माला में पिरोने का प्रयास किया है

मुझे उम्मीद है यह बाल कविता संग्रह अवश्य ही मेरे प्यारे बच्चो के लिए मनोरंजक और उपयोगी साबित होगी |

,

_सुरेखा नवरत्न

अनुक्रमणिका

राष्ट्रीय पक्षी मोर..... 6

किलकारी..... 7

नन्हें- नन्हें कदमों से..... 9

मेरे आंगन की गौरैया..... 11

बरखा रानी आई है..... 13

तितलियाँ..... 14

गुन- गुन भौंरा 15

बादल आया..... 16

रेल गाड़ी..... 18

चांदी का गोला..... 20

चलो आसमान की सैर करें..... 21

इमली का बूटा..... 23

जूगनू जगमग जूगनू 24

पीपल का छांव..... 26

कोयल रानी..... 28

बचपन प्यारा होता है..... 29

उड़न खटोला..... 31

जादूई छड़ी..... 33

मेरी साईकिल..... 35

लंबी पूंछ वाली बंदर..... 36

छुपा छुपी खेलें..... 37

मेरे गाँव का स्कूल..... 38

मेरी गाय..... 40

मम्मी स्कूल नहीं जाऊंगा..... 41

मौसम का तबियत खराब है..... 43

शिकायत..... 44

चमकता सूरज..... 46

किताबो मे मिलती है..... 48

रसगुल्ला..... 50

आओ! घर- घर खेलें..... 52

बचपन का दिन सुहाना..... 54

राष्ट्रीय पक्षी मोर

मोर नाचे पंख पसार,

पंख में लगे हैं रंग हजार.

पीकू'-पीकू है गाना गाता,

सबके मन को है भाता.

एक टांग में खड़ा होकर,

अपने धुन मे मगन हो जाता.

सिर पर सुंदर कलगी सोहे,

सुंदरता इनके ,मन को मोहे.

जंगल की यह शान बढ़ाता.

पास बुलाने पर नहीं आता,

सब पंछियों का दुलारा है

तभी तो राष्ट्रीय पक्षी हमारा है.

किलकारी

तुम ही मेरी बगिया,

तू ही मेरी फूलवारी,

गूंज उठे है घर आंगन।

जब तू मारे है किलकारी ,

खिल उठे मन की बगिया।

जब तू आई मेरी दुवारी ,

गूंज उठे मेरा घर आंगन।

जब तू मारे किलकारी,

तेरी हंसी तेरी खिल खिलाहट।

मन मोह लेती है तेरी,

मीठी -मीठी सी मुस्कुराहट।

मेरी नन्ही सी गुडिया,

जादू की है पुडिया।

नाजुक नाजुक तेरे हाथ,

कोमल कोमल तेरे पांव।

तुम्हारे आने से बस गई,

मेरे सपनो की गाँव।

नन्हे -नन्हे कदमों से

नन्हे -नन्हे कदमो से,

घर -आंगन नापती है.

अपने छोटी- छोटी पैरो से,

वह आसमान नापती है.

दौड़ती है भागती है।

गिरती है फिसलती है.,

कभी धीरे -धीरे चलती है।

कभी वहीं पर रुक जाती है।

हाथो में चाक लेकर,

आड़ी खड़ी लिखती है।

कभी जमीन पर चित्र तो,

तो कभी लकीरें खिंचती है।

कभी चुपके से चाक,

मुंह में डाल लेती है।

मम्मी के डांट लगाने पर,

रोनी सूरत बनाती है ।

मेरे आंगन की गौरैया

मेरे आंगन की गौरैया ।
मुझे भूल न जाना,
घूम फिर कर बगिया से ।
वापस फिर तुम आना,
छोटे-छोटे तिनकों से ।
घोसला फिर यहीं बनाना,
जब मैं चावल फटकूंगी ।
चूं-चूं करके आना,
छोटे - छोटे पैरों से ।
फूदक- फूदक कर आना,
नन्हें- नन्हें चोच से अपने ।

दाना चुगने आना,
आओगे जब वापस तो ।
मित्रों को भी साथ लाना,
वो प्यारी सी गौरैया ।
मेरे आंगन की गौरैया,
मुझे भूल न जाना ।

बरखा रानी आई है

चलने लगी है ठंडी हवा,

घिर आई है काली घटा।

शुरु हुई बूंदो की छनछन,

चलो बारिश में भीगे हम ।

गर्मी सारे अब हवा हुए,

खुशियाँ लेकर बारिश आए ।

भर गई है गली और आंगन,

चलो नाव चलाएं हम ।

बड़े दिनो के बाद आज,

बरखा रानी आई है ।

चलो इनके स्वागत में,

गीत खुशी के गाए हम .

तितलियाँ

तितलियाँ इठलाती, बलखाती,

प्यारे- प्यारे फूलो पर मंडराती।

कलियाँ और गुलशन के संग,

वादियो की है शोभा बढ़ाती।

नीले ,पीले और हरे, गुलाबी,

रंग – बिरंगे , प्यारे -प्यारे है।

तरह- तरह के रूप है इनके ,

प्रकृति के प्यारे- दुलारे है।

देखकर इनके सुन्दरता को,

मन खुशियो से भर जाती है।

गुन- गुन भौंरा

गुन- गुन करते भौंरा आए,

नये पुराने गीत सुनाए।

रंग इनके तो काला हैं,

लेकिन दिखता बहुत निराला है।

गले मैं पहने सुनहरे हार,

घूम रहे हैं देखो खार खार।

फूलो के रस इनको भाता,

पास हमारे ये नही आता।

डाल -डाल पर जाकर भौंरा,

गुन गुन गुन करता है।

मीठे- मीठे रस फूलों का,

जा जाकर ये चखता है

बादल आया

बादल आया बादल आया,

उमड़ घुमड़ कर बादल आया।

बरसे पानी टप, टप, टप,

भागो भैया झट, झट, झट।

भर गए हैं तलैया लबालब,

मछली मेंढक खुश हो गए।

पानी के धार में बह गए.

बह कर गए समंदर में।

पहुंचे धरती के अंदर में.

मिला उसे बादल का नाना।

बोले, पानी खूब गिराना,

हमें पानी कम पड़ जाती है।

बहुत सारे जीव मर जाती है,

हर साल सूखा पड़ जाती है।

बादल को यह बात बताना,

अब के बरस पानी खूब गिराना।

रेल चली

रेल चली है छुक छुक छुक,

करती है इंजन भुक भुक भुक

सीटी जोर से बजाती है।

पटरी पर दौड़ती जाती है.

इस शहर के लोगो को।

उस शहर पहुंचाती है.

चलो बैठें खिड़की के पास ।

जहाँ से दिखती है हमें,

जंगल, पेड़ और घास।

रेल दौड़ती जाती है,

नई नई नजारा दिखाती है।

दौड़ रहे हैं इनके साथ,

वन पर्वत नदी और नाले।

बैठे रहो मम्मी -पापा के संग,

तुम भी अपना समान संभाले।

समान अपना कभी छोड़ना नही,

खिड़की का शीशा तोड़ना नही।

रेल सरकारी संपत्ति है,

इसलिए ये हमारी भी पूंजी है।

चांदी का गोला

एक बड़ा चांदी का गोला।

रात में निकलता है,

चम -चम -चम चमकता है।

रोशनी से भर देता है,

अंधियारी को दूर भगाकर।

उजियारा कर देता है.

जादुई है चांदी का गोला।

उसके अंदर रहता है,

एक बंदर बड़ा ही भोला ।

देखता रहता है चुपचाप वह,

टुकुर -टुकर, बस टुकुर -टुकुर।

चलो आसमान की सैर करें

चलो करें सैर आसमान की,

तारो से भरे गगन की।

पंख लगा कर उड़ चलें,

परिंदो के साथ चमन में।

उड़ते उड़ते चलेंगे हम,

तारो से भरे हुए शहर में।

डिनर करेंगे सारे दोस्त,

गुरु ग्रह के घर में।

गुरु ग्रह को बोलेंगे,

चलो तारो का नगर घुमाने।

खरीद लेंगे बाजार में हम,

ढेर सारे सामान इसी बहाने।

वहाँ से लेकर आऊंगा मैं,

जादू का बड़ा पिटारा।

जिसमें भरकर लाऊंगा,

ढेर सारे चमकिले सितारा।

इमली का बूटा

आ गया गर्मी छुटटी का दिन,

सब मित्रो संग धूम मचाना है.

अमराई में खट्टी मिठी आम।

और इमली तोड़ने जाना है।

सब मिलकर जंगल जाएंगे,

बेरी तोड़ तोड़कर घर लाएंगे।

इमली की खट्टी मिठी गूदे से,

गोल -गोल बूटा बनाएंगे।

नहीं दैंगे मम्मी पापा को,

चटकारे लगा -लगा कर खाएंगे ।

जूगनू जगमग जूगनू

मैंने पूछा एक दिन बाबा से,

बाबा एक बात जरा बताओ ।

जगमगाते जगमग जूगनू,

इधर उधर मंडराते है जूगनू।

आसमान को छोड़कर कैसे,

जमीन पर चले आते है जूगनू।

बाबा बोले सुन मेरे मुनिया,

जिसे तू जूगनू समझती है।

वो एक छोटा कीट पतंगा है,

पेट पर है उनके चमकीले रसायन।

इसीलिए जगमग चमकता है,

और आसमान में जो जूगनू है ।

वो जूगनू नहीं है तारे हैं,

धरती से भी बड़े बड़े हैं वो

एक नहीं असंख्य, सारे है ।

धरती पर वे आ नही सकते,

दूर से ही चमकते है।

जैसे है हमारे चंदा मामा,

वैसे ही है तारा भी मामा।

चांद, सूरज, ग्रह तारे नक्षत्र।

सब के सब भाई भाई है,

जैसे धरती हमारी माता है ।

वैसे वे भी आसमान के,

गोद में सब समाए है।

पीपल का छांव

पीपल का हरा भरा छांव,

जहाँ बसते थे सपनो का गाँव।

डाल पर उसके रहते थे,

बहुत सारे पक्षियो का घोषला।

दिन रात वहाँ रहता था,

पंछियो का कलरव कोलाहल।

पूरे गाँव में सबसे बड़ा था,

वह पुराना पीपल का पेड़।

हर नागरिक मेरे गाँव के,

उसके गोद में खेले थे।

चारो तरफ बना था चबूतरा,

पास में था बड़ा सा मैदान।

गाँव के सारे बूढ़े बच्चे,

किया करते थे वहाँ विश्राम।

देता था वह वृक्ष सभी को,

तन मन की शांति और आराम।

कोयल रानी

कोयल रानी कोयल रानी,

कूहू कूहू गीत सुनाओ न।

आओ बैठो न पास हमारे,

मीठी- मीठी अपने बोली से।

मन हमारा बहलाओ न,

सूरत तुम्हारे काली है।

फिर भी लगती बहुत ही,

तुम प्यारी प्यारी हो।

इस पेड़ से उस पेड़ पर,

उड़ उड़ कर तुम जाती हो ।

अपनी मीठी बोली से,

सबका मन मोह लेते हो.

बचपन प्यारा होता है.

बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.
खेलकूद में बीत जाते हैं दिन
जाने कब रात हो जाता है,
दादी की कहानी सुनते.
नानी की जुबानी सुनते,
दादा के ऊंगली थामकर
पूरे गाँव का भ्रमण करते.

मित्रों के संग नाचते गाते
जाने कब बड़े हो जाते है.
बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.

दोस्तों के संग अमराई में
रामू काका के आम चुराते,
बेरियों के कंटीले झाड़ से.
खट्टे- खट्टे बेर है खाते,
खेत के पगडंडी से चलकर
स्कूल भी पढने जाना है.
दोपहरी के धूप में जाकर,
चना चबेना भी खाना है.
दिन भर धमाचौकड़ी और,
जो रातभर चैन से सोता है
बचपन तो ऐसा ही होता है.

बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.

उड़नखटोला

एक उड़नखटोला बनाऊंगा,

बैठकर उसमें आसमान में.

चिड़ियों के साथ उड़ जाउंगा,

राकेट के जैसा उड़ जाएगा.

मेरा बनाया हुआ उड़नखटोला,

चारों कोने में उसका रंगीन.

जूगनू बत्ती भी लगाऊंगा,

बाज पक्षी कि तरह उस पर.

बड़े- बड़े पंख भी लगाउँगा,

नहीं बनाउंगा छत उसका.

फिर तारों और पृथ्वी को,

ऊपर से देख नहीं पाऊंगा.

मेरे बैठने के लिए मुलायम,

और गद्देदार सीट लगाऊंगा.

चलाना नहीं पड़ेगा उसको,

मैं जहाँ कहूंगा, ले जाएगा.

नहीं ले जाउंगा साथ तुम्हें,

मैं अकेले ही उड़ जाउंगा.

जादुई छड़ी

मेरी जादुई छड़ी कमाल दिखा,
मुझे भी जादू चल सीखा.
उछाल सकूँ हवा में सिक्का,
ऐसा ही करतब मुझे सीखा.
तीन बार छड़ी घुमाऊं तो,
कुर्सी हवा में लटक जाए.
रूमाल को उसमें छुवा दूं तो.
कबूतर वो बनकर उड़ जाए,

कागज के टुकड़ों से बन जाए.

ढेर सारे कड़कते हुए रूपैया,

भूख लगे तो खाना भी उसमें से

तरह- तरह का निकले भैया.

ओ मेरे प्यारे जादू की छड़ी,

कमाल दिखाना जी बड़ी- बड़ी.

मेरी साईकिल

मेरी साईकिल जब चलती है,
हवा से वो बातें करती है.
रिनू, मिनू, छोटू और मोटू,
सबको पीछे छोड़ जाती है.
रेस में चलती सबसे आगे,
ट्रेन की तरह सरपट भागे.
सड़क से लेकर पगडंडियों ,
पर भी, दौड़े है सबसे आगे.
रंग है इसके लाल, गुलाबी,
छोटी सी है इसकी चाबी.
रात को लाइट भी जलती है,
घंटी ट्रिन- ट्रिन करती है.

लंबी पूंछ वाली बंदर

लंबी पूंछ वाली बंदर,

छत पर रोज आता है.

घर के ऊपर इधर से उधर,

धमा चौकड़ी मचाता है.

कूद फांद कर वह हमारे

बाड़ी में आ जाता है.

तोड़ – तोड़ कर सारे फल

और सब्जी खा जाता है

मैं जब पास में जाऊँ तो

अपना दांत दिखाता है.

छुपा छुपी खेलें

सीता, गीता, रीना, मीना,

आओ, आओ जल्दी आओ.

छुपा-छुपी खेले जल्दी आओ,

सब छुप जाओ, मेरा है दांव.

बीस तक की गिनती लगाऊं,

तुम बोलोगे, तभी मैं आऊं.

कोई छुपा है खाट के नीचे,

कोई खड़ा है दरवाजे के पीछे.

धीरे -धीरे मैं कदम बढ़ाऊँ,

देखो कहीं रेस न हो जाऊँ.

मेरे गांव का स्कूल

मेरे गाँव का प्यारा स्कूल
वहाँ बच्चे पढ़ते बहुत सारे है.
सब के सब दोस्त हमारे हैं,
पढ़ते हैं हम साथ- साथ.
खेलते भी हैं साथ -साथ,
दोपहर का भोजन भी हम
सब करते हैं साथ- साथ.
गुरू जी हमें पढ़ाते हैं,
जो नहीं जानते हैं हम

उसे प्यार से समझाते हैं.

अच्छे -अच्छे कहानियाँ और,

गीत, कविता भी सुनाते हैं.

खो- खो, कबड्डी ,फूटबाल,

और बहुत सारे खेलकूद

सभी को अच्छे से कराते हैं,

स्कूल में हमारे गार्डन हैं.

जिसमें खिले हुए हैं फूल,

देखो तो कितना प्यारा है

हमारे गाँव का स्कूल.

मेरी गाय

मेरी गाय बहुत प्यारी है,

उसकी रंग सफेद काली है.

श्यामा गाय उसका नाम है

घास भूसा वह खाती है,

बुलाऊँ तो पास आ जाती है.

सुबह को वह जंगल में,

घास चरने चली जाती है.

उसका एक छोटा बछड़ा है,

जिसका नाम नंदनी है

वो मेरे पास ही रहती है.

मैं उनका देखभाल करती हूँ,

शाम को श्यामा आती है.

खूब सारा दूध देती है,

हम दोनों दूध पीते हैं.

मम्मी स्कूल नहीं जाऊंगा?

मम्मी स्कूल नहीं जाऊंगा?
जो कहोगे सब मान जाऊंगा,
सब कहते गुरुजी मारते हैं.
पढ़ना नहीं आता तो बहुत,
डांटते और फटकारते हैं.
क्या ये सच है मम्मी बोलो न?
स्कूल में क्या होता है बोलो न?
मम्मी बोली सुन मेरे लाल,
दूर करूंगी मैं, बैठो यहाँ,
तुम्हारे मन का यह सवाल.
स्कूल बड़ा प्यारा होता है,

गुरूजी कभी नहीं मारते हैं.

हमको जो भी नहीं आता,

हाथ पकड़ कर सिखाते हैं.

स्कूल में होते हैं दोस्त सारे,

बच्चे पढ़ते हैं प्यारे- प्यारे.

अच्छा बच्चा बनना है तो,

जल्दी तैयार हो जाओ.

तुमको बहुत आगे बढ़ना है.

मौसम का तबियत खराब है

कभी गर्मी है तो कभी बरसात,

आजकल मौसम का भी है

मेरी तरह शायद, तबियत खराब.

अभी -अभी धूप निकला था,

अभी- अभी हो गई अब बरसात.

निकलोगे घर से यदि बाहर तो,

छाता अपने साथ लेकर जाना.

बदल रहा है मौसम और

बदल रहा है दोस्त जमाना.

शिकायत

मेरी पेंसिल तुमने क्यूँ तोड़ी,

किताब का पन्ना क्यूँ है मोड़ा.

पापा को आज बताऊंगा,

मेरी उंगली तूने क्यूँ मरोड़ा.

आज शिकायत करके पापा से,

तुम्हें बहुत मार खिलाऊंगा.

तुमनें मुझे परेशान किया है,

उसका बदला आज चुकाउंगा.

तुमनें मेरे बस्ते से पेन भी,

कल चुपचाप निकाला था.

वापस भी नहीं किया मुझको,

जब मैंने तुमसे मांगा था.

इसीलिए मैंने पापा को बुलाया है.

गुरुजी से मिलकर तुम्हारा,

शिकायत भी करवाया है.

चमकता सूरज

आसमान के ऊपर चमकता सूरज

दुनिया को रौशन करता है

जगमग कर जाता है सूरज

सबको शक्ति यह देता है

ऊर्जा का अनुपम स्रोत है सूरज

इसके धूप से शक्ति मिलती है

पेड़ -पौधे और जीव जंतु को

इसी से ताकत मिलती है

अगर न होता आसमान में सूरज

सारी दुनिया अंधेरा होता

कभी नहीं फिर दिवस होता

हरदम रात ही रात है होता

देख नहीं पाते एक दूसरे को

धरती पर अंधियारा छा जाता.

किताबों में मिलता है

किताबो में मिलता है

ज्ञान की ढेर सारी बातें,

समंदर की बातें,

अंतरिक्ष की बातें ।

किताबो में छिपा है

विद्या का भण्डार,

किताबो में मिलती है

ज्ञान का हर सार ।

वेद है पुराण है

और गीता, कुरान है,

ज्ञान विज्ञान है इसमें

समाया सारा जहान् है ।

गाँव है नगर है और

प्रकृति है ,पहाड़ है ,

धरती, आसमान है

समस्त ब्रम्हांड है।

रसगुल्ला

मीठे रस से भर- भरे,

मीठे- मीठे, गोल- गोल.

गुलगुले जैसा गुलगुला,

मन को भाए रसगुल्ला.

देख लो इसे सामने तो,

मन ललचाए रसगुल्ला.

मत डरो किसी से भई,

खाओ गपा गप खुल्ला.

मम्मी अगर डांटेगी तो,

उनको भी एक दे देना.

खाकर के मीठा रसगुल्ला,

वो भी खुश हो जाएगी.

पापा अगर आ जाए तो,

उसको भी ललचा देना.

अगले दिन फिर से लाएगा,

रसगुल्ला और खईखजाना.

आओ ! घर घर खेलें

आओ! सखी रे खेल खेलें,

आज चलो हम घर घर खेलें.

इस जगह का आधा तू ले ले,

कच्ची ईंटो से घर बनाएं.

गत्ते से उसका छत बनाएं,

घर में रहेगा तीन कमरा.

गुड्डे, गुड़िया का और मेरा,

आंगन में रखूंगी एक खंबा.

जिसमें रहेगा रस्सी लंबा,

उसमें बाधूंगी टामी को.

कोने में रखूंगी एक गौशाला,

गाय रहेंगी उसमें ढेर सारा.

खेती किसानी किया करूंगी,

सब्जी और फल लगाउंगी.

बेचने उसे बाजार जाउंगी,

ढेर सारा मिलेगा पैसा,

घर घर खेलेंगे हम ऐसा.

बचपन का दिन सुहाना

शरारत बचपन के सुहाना होता है,

कितना प्यारा बालपन हमारा होता है.

मस्ती, शरारत और लड़ना झगड़ना,

बगीचे में जाकर तितलियाँ पकड़ना,

पेड़ो में चढ़ना, और आम चुराना.

दिन सभी खो गए, बातें हुई पुराना,

अपनी जिद के दम पर बातें मनवाना.

मम्मी -पापा को परेशान करते रहना,

बातें बनाना, बहाने बनाना कहाँ खो गया.

वो शरारत भरे दिन बचपन का सुहाना,

मेरी पतंग की लंबी पूंछ

मेरी पतंग की लंबी पूंछ,

उड़ रही है सबसे ऊपर.

रीता, गीता, नीता सब के,

पतंग को पीछा छोड़ गया.

अपने मजबूत धागे से वह,

सब का धागा तोड़ गया.

बहुत दूर उड़ चला है,

आंखो से नहीं दिख रहा.

शाम के ठंडी हवा के संग,

आसमान से बातें करता है.

मेरी पतंग की लंबी पूंछ,

पेड़ो पर है अटक गई.

जोर लगा कर खींचा तो,

आधी पूंछ ही कट गई.

हाथी आया गाँव में

हाथी आया गाँव में,

खड़ा है पीपल के छांव में.

शरीर है उसका बहुत बड़ा,

टहनी खा रहा है खड़ा- खड़ा.

कान है उसका चौड़ा- चौड़ा,

पूंछ है उसकी बहुत छोटी.

पेट है उसका भारी भरकम,

आखें हैं छोटी- छोटी.

गन्ना खूब खाता है,

जोर-जोर से चिंघाड़ता है.

साथ उसके है दो महावत,

घर- घर लेकर जाते हैं,

लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं.

हाथी को गणेशा मानते हैं.

समाप्त